

रामदेव चालीसा

दोहा 1

श्री गुरु पद नमन करि, गिरा गनेश मनाय।
कथूं रामदेव विमल यश, सुने पाप विनशाय ॥

दोहा 2

द्वारकेश ने आय कर, लिया मनुज अवतार।
अजमल गेह बधावणा, जग में जय जयकार ॥

चौपाई 1

जय जय रामदेव सुर राया।
अजमल पुत्र अनोखी माया ॥

चौपाई 2

विष्णु रूप सुर नर के स्वामी।
परम प्रतापी अन्तर्यामी ॥

चौपाई 3

ले अवतार अवनि पर आये।
तंवर वंश अवतंश कहाये ॥

चौपाई 4

संत जनों के कारज सारे।
दानव दैत्य दुष्ट संहारे ॥

चौपाई 5

परच्या प्रथम पिता को दीन्हा।
दूध परीण्डा मांही कीन्हा ॥

चौपाई 6

कुमकुम पद पोली दर्शाये।
ज्योंही प्रभु पलने प्रगटाये ॥

चौपाई 7

परचा दूजा जननी पाया।
दूध उफणता चरा उठाय ॥

चौपाई 8

परचा तीजा पुरजन पाया।
चिथड़ों का घोड़ा ही साया ॥

चौपाई 9

परच्या चौथा भैरव मारा।
भक्त जनों का कष्ट निवारा ॥

चौपाई 10

पंचम परच्या रतना पाया।
पुंगल जा प्रभु फंद छुड़ाया ॥

चौपाई 11

परच्या छठा विजयसिंह पाया।
जला नगर शरणागत आया ॥

चौपाई 12

परच्या सप्तम् सुगना पाया।
मुवा पुत्र हंसता भग आया ॥

चौपाई 13

परच्या अष्टम् बौहित पाया।
जा परदेश द्रव्य बहु लाया ॥

चौपाई 14

भंवर डूबती नाव उबारी।
प्रगत टेर पहुँचे अवतारी ॥

चौपाई 15

नवमां परच्या वीरम पाया।
बनियां आ जब हाल सुनाया ॥

चौपाई 16

दसवां परच्या पा बिनजारा।
मिश्री बनी नमक सब खारा ॥

चौपाई 17

परच्या ग्यारह किरपा थारी।
नमक हुआ मिश्री फिर सारी ॥

चौपाई 18

परच्या द्वादश ठोकर मारी।
निकलंग नाडी सिरजी प्यारी ॥

चौपाई 19

परच्या तेरहवां पीर परी पधारया।
ल्याय कटोरा कारज सारा ॥

चौपाई 20

चौदहवां परच्या जाभो पाया।
निजसर जल खारा करवाया ॥

चौपाई 21

परच्या पन्द्रह फिर बतलाया।
राम सरोवर प्रभु खुदवाया ॥

चौपाई 22

परच्या सोलह हरबू पाया।
दर्श पाय अतिशय हरषाया ॥

चौपाई 23

परच्या सत्रह हर जी पाया।
दूध थणा बकरया के आया॥

चौपाई 24

सुखी नाडी पानी कीन्हों।
आत्म ज्ञान हरजी ने दीन्हों॥

चौपाई 25

परच्या अठारहवां हाकिम पाया।
सूते को धरती लुढ़काया॥

चौपाई 26

परच्या उन्नीसवां दल जी पाया।
पुत्र पाय मन में हरषाया॥

चौपाई 27

परच्या बीसवां पाया सेठाणी।
आये प्रभु सुन गदगद वाणी॥

चौपाई 28

तुरंत सेठ सरजीवण कीन्हा।
भक्त उजागर अभय वर दीन्हा॥

चौपाई 29

परच्या इक्कीसवां चोर जो पाया।
हो अन्धा करनी फल पाया॥

चौपाई 30

परच्या बाईसवां मिर्जो चीहां।
सातो तवा बेध प्रभु दीन्हां॥

चौपाई 31

परच्या तेईसवां बादशाह पाया।
फेर भक्त को नहीं सताया॥

चौपाई 32

परच्या चौबीसवां बख्शी पाया।
मुवा पुत्र पल में उठ धाया॥

चौपाई 33

जब-जब जिसने सुमरण कीन्हां।
तब-तब आ तुम दर्शन दीन्हां॥

चौपाई 34

भक्त टेर सुन आतुर धाते।
चढ़ लीले पर जल्दी आते॥

चौपाई 35

जो जन प्रभु की लीला गावें।
मनवांछित कारज फल पावें॥

चौपाई 36

यह चालीसा सुने सुनावे।
ताके कष्ट सकल कट जावे॥

चौपाई 37

जय जय जय प्रभु लीला धारी।
तेरी महिमा अपरम्पारी॥

चौपाई 38

मैं मूरख क्या गुण तब गाऊँ।
कहाँ बुद्धि शारद सी लाऊँ॥

चौपाई 39

नहीं बुद्धि बल घट लव लेशा।
मती अनुसार रची चालीसा॥

चौपाई 40

दास सभी शरण में तेरी।
रखियो प्रभु लज्जा मेरी॥